SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. 1st YEAR SESSION – 2021-2023

SUBJECT - भारतीय शिक्षा का इतिहास

TOPIC NAME – लार्ड कर्जन की शिक्षा नीति

PAGE NO.
DATE :

लार्ड कर्जन की शिक्षा नीति
Lord Curzon's Education Policy

19वीं शताब्दी के अन्तिम समय में भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन अपने चरमोत्कर्ष पर था। इसी समय जनवरी 1899 को भारत के नए गवर्नर जनरल लार्ड कर्जन आए लार्ड कर्जन विद्वान कुशल प्रशासक और पाश्चात्य सभ्यता का पोषक था। इनका मत था कि शिक्षा में सुधार करके ही प्रशासन को चुस्त दुरुस्त बनाया जा सकता है। इसके लिए उसने सर्वप्रथम 1901 में शिमला शिक्षा सम्मेलन किया तथा कुछ शिक्षा नीति सम्बन्धी सरकारी प्रस्ताव प्रकाशित कराया जिनका विवरण निम्नलिखित है।

शिमला शिक्षा सम्मेलन – 1901

सम्मेलन का आयोजन —

भारत में शैक्षिक सुधारों को क्रियान्वित करने के लिए 1901 में शिमला में भारत के उच्च शिक्षा और वि० वि० अधिकारियों का एक गुप्त शिक्षा सम्मेलन आयोजित किया गया जिसे शिमला सम्मेलन या शिमला अकार्ड कहा जाता है। इस सम्मेलन में प्रत्येक प्रान्त के शिक्षा संचालक एवं मिशनरियों के प्रतिनिधि को ही शामिल किया गया। भारतीयों को कोई स्थान नहीं दिया गया था।

PAGE NO.
DATE :

यह सम्मेलन 15 दिनों तक चला जिसमें 150 प्रस्ताव पारित किए गए।

शिक्षा नीति —

सम्मेलन में पारित प्रस्ताव के आधार पर निम्न शिक्षा नीति निर्धारित की थी।

1) सरकार अभी शिक्षा से अलग नही होगी समस्त क्षेत्रों पर उसका नियंत्रण बना रहेगा।
2. आवश्यकतानुसार सरकारी विद्यालयों की स्थापना की जायेगी।
3. सरकार पहले से अधिक धन शिक्षा पर व्यय करेगी।

भारतीय वि॰वि॰ आयोग 1902

नियुक्ति के कारण —

कर्जन का विचार था कि भारतीय वि॰वि॰ में सुधार की आवश्यकता है। 1898 में लन्दन वि॰वि॰ का नवीनीकरण करना जरूरी था कॉलेजों की सं॰ में वृद्धि हो गई थी। शिक्षकों को उचित प्रतिनिधित्व प्राप्त नहीं था। कॉलेजों का शिक्षा स्तर गिर गया था। इन सभी कारणों के जाँच करने के लिए 27 जनवरी 1902 को आयोग की नियुक्ति की गई जिसके अध्यक्ष सर थामस रेले थे।

COURSE NAME – B.Ed. 1st YEAR
SESSION –
SUBJECT – भारतीय शिक्षा का इतिहास
TOPIC NAME – राधाकृष्णन आयोग की शिक्षा नीति

PAGE NO.
DATE :

जाँच के विषय (Terms of Referance)

वि॰वि॰ की दशा एवं उनकी उन्नति की जाँच करना उनके कार्यप्रणाली को सुधारने के लिए प्रस्ताव प्रस्तुत करना एवं ऐसे उपाय सुझाना जिनसे वि॰वि॰ का शिक्षण स्तर ऊपर उठ सके।

आयोग के सुझाव एवं संस्तुतियाँ (Suggestions and Recomendations of of the commission)

प्रशासन एवं संगठन

(1) सीनेट एवं सिण्डिकेट का पुनर्गठन आवश्यक है सीनेट की सं॰ कम कर दी जाए और उनका अवधि 5 वर्ष तथा सिण्डिकेट के सदस्यों की सं॰ 5 से 15 तक रखी जाए।

2 प्रत्येक वि॰वि॰ का अधिकार क्षेत्र निश्चित कर दिया जाए।

शिक्षण व्यवस्था (Arrangement of Teaching)

(1) विश्वविद्यालय शिक्षा प्रदान करने के लिए उच्च योग्यता प्राप्त पाठ्यापकों की नियुक्ति की जाए।

2. पाठ्यक्रमों में सुधार किया जाए।

3. वि॰वि॰ की परीक्षा प्रणाली एवं मूल्यांकन कार्य में विशेष सुधार किए जाएं।

आयोग के गुण Merits of Commission

1. आयोग ने वि० वि० में सीनेट के सदस्यों की संख्या सीमित कर दी और उनका कार्यकाल 5 वर्ष निश्चित कर दिया जिससे वि०वि० के प्रशासन एवं संगठन में स्थिरता आ गई।

2. कॉलेजों एवं वि० वि० के प्राध्यापकों एवं सुयोग्य विद्वानों को प्रतिनिधित्व देने का सुझाव दिया।

3. सिण्डीकेट के सदस्यों की सं० में वृद्धि करने की संस्तुति की थी जिससे अधिक लोगों को सीनेट में प्रतिनिधित्व मिलने लगा।

4. आयोग ने वि०वि० एवं महाविद्यालयों के पाठ्यक्रमों परीक्षा प्रणाली में सुधार करने का प्रयास किया।

दोष — (Demerits)

1. महाविद्यालयों को सम्बद्धता हेतु नियम कठोर कर देने से महाविद्यालयों की स्थापना में कमी आ गई।

2. आयोग ने महाविद्यालयों में शिक्षण को स्नातक स्तर तक ही सीमित रखा।

सम्बद्ध महाविद्यालयों के नियमित निरीक्षण से वि०वि० के आन्तरिक मामलों में सरकारी हस्तक्षेप में वृद्धि हुई।

निम्न स्तर के महाविद्यालयों को बंद करने की संस्तुति भी दोषपूर्ण।

...ट के सदस्यों
...र उनका कार्यकाल
... जिससे विश्व०
... स्थिरता आ गई।

...ध्यापकों एवं
...प्रतिनिधित्व देने

... सं० में वृद्धि
...ी जिससे
...में प्रतिनिधित्व

...महाविद्यालयों के
...ी में सुधार करने

...सम्बद्धता हेतु नियम
... महाविद्यालयों की स्थापना

...लयों में शिक्षण को
... ही सीमित रखा।

...यों के नियमित
...विश्व० के आन्तरिक
...रकारी हस्तक्षेप में वृद्धि हुई।
...यालयों को बंद करने की
...पूर्ण।

SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

SESSION – 2021-2023

COURSE NAME – B.Ed. 1st YEAR

SUBJECT – भारतीय शिक्षा का इतिहास

PAGE NO.

DATE :

सम्बद्ध महाविद्यालय (Affiliated colleges)

(1) महाविद्यालयों को मान्यता प्रदान करने के नियम कठोर रखी जाए।
2. मान्यता प्राप्त महाविद्यालयों का नियमित निरीक्षण किया जाए।
3. महाविद्यालयों में स्नातक स्तर का शिक्षण होना चाहिए।
4. निम्न कोटि के महाविद्यालयों को बंद कर दिया जाए।
5. मैट्रिकुलेशन का स्तर उन्नत किया जाए। इण्टरमीडिएट कक्षाएँ समाप्त की जाए। और स्नातक पाठ्यक्रम तीन वर्ष का कर दिया जाए।
6. वि०वि० द्वारा सम्पादित परीक्षा और मूल्यांकन प्रणाली में पर्याप्त सुधार किया जाए।

गुण + दोष

शिक्षा नीति सम्बन्धी सरकारी प्रस्ताव 1904

11 मार्च 1904 को लार्ड कर्जन ने अपनी शिक्षा नीति को एक सरकारी प्रस्ताव के रूप में प्रकाशित किया। इस प्रस्ताव में तत्कालीन भारतीय शिक्षा के दोषों का सूक्ष्म विश्लेषण दो दृष्टियों से किया गया है।

संख्यात्मक दृष्टि से शिक्षा के दोष —

(1) 5 गाँवों में स्कूल नहीं है। 6 में से चार बालकों में तीन अशिक्षित हैं और 40 में से 1 बालिका किसी प्रकार से स्कूल में शिक्षा प्राप्त

PAGE NO.
DATE :

करती है।

गुणात्मक दृष्टि से प्रस्ताव में शिक्षा के दोष

1) उच्च शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य सरकारी नौकरी प्राप्त करना है।
2) पाठ्यक्रम पूर्णतयां साहित्यिक है।
3) स्कूलों और कॉलेजों में विद्यार्थियों की बुद्धि का विकास कम किया जाता है और स्मृति का अधिक
4) अंग्रेजी भाषा को प्रधानता देकर भारतीय भाषाओं की उपेक्षा की जाती है।
उपर्युक्त दोषों के निराकरण हेतु शिक्षा के सभी क्षेत्रों निम्नलिखित सरकारी नीति घोषित की गई।

प्राथमिक शिक्षा

प्राथमिक शिक्षा का विकास करना सरकार का मुख्य कर्तव्य होगा।
पाठ्यक्रम में अंग्रेजी सम्मिलित नहीं किया जायेगा।
अंग्रेजी भाषा की शिक्षा 13 वर्ष के बाद दी जायेगी।
शिक्षण विधियों में सुधार और किण्डर गार्टेन विधि का उपयोग किया जायेगा।
बालिकाओं के शिक्षा के लिए अधिक पाठशालाएं खोली जायेंगी।

NAME – B.Ed. 1st YEAR SESSION – 2021-2023

भारतीय शिक्षा का इतिहास

माध्यमिक शिक्षा

PAGE NO.
DATE :

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षण स्तर को बढ़ाने के लिए निरीक्षण का समुचित प्रबन्ध किया जायेगा।

2 पाठ्यक्रम में व्यावसायिक विषयों को सम्मिलित किया जायेगा।

3. प्रत्येक जिले में एक राजकीय माध्यमिक विद्यालय स्थापित किया जायेगा।

4. शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण का प्रबन्ध किया जायेगा।

वि० वि० शिक्षा –

1 उच्च शिक्षा के विस्तार एवं प्रसार और उन्नति के लिए आवश्यक धन उपलब्ध कराया जायेगा।

2. वि० वि० शिक्षा में बाह्य परीक्षाओं के प्रमुखत्व को कम किया जायेगा।

कर्जन के शिक्षा संबंधी अन्य प्रयास भी रहे जैसे –

(1) केन्द्रीय शिक्षा विभाग की स्थापना कृषि, शिक्षा की व्यवस्था, पुरातत्व ऐतिहासिक भवनों, स्मारकों के संरक्षण विभाग की स्थापना विदेशों में अध्ययन रत छात्रों को छात्रवृत्तियों की व्यवस्था

राष्ट्रीय शिक्षा आन्दोलन

अंग्रेजों की दोषपूर्ण नीतियों से लोग

PAGE NO.
DATE :

पहले से ही असंतुष्ट थे। 20 जुलाई 1905 में लार्ड कर्जन द्वारा कृत बंगाल विभाजन को भारतीय राष्ट्रीय राष्ट्रीयता में और उबाल ला दिया। इससे भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन और उग्र रूप धारण कर लिया। उसी समय में ही रौलेट एक्ट बना जिसे नेताओं को लगा कि सरकार लोगों की उचित मांग को टालने की प्रयास कर रही है। इसी समय जालियांवाला बाग हत्याकांड भी हो गया इससे जनता में और आक्रोश व्याप्त हो गया। 19 वीं शताब्दी में यूरोप तथा अन्य देश में राष्ट्रीय आंदोलन चले उनसे भारतीय को प्रेरणा एवं आलम्बन मिली। अतः भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 1905 ई० को कोलकता अधिवेशन में बंगाल विभाजन के विरोध में राष्ट्रीय आंदोलन प्रारंभ करने का निश्चय किया जिसे बाद में स्वदेशी आंदोलन भी कहा गया। इस अधिवेशन में चार प्रमुख प्रस्ताव पारित किये गए थे —

(1) स्वराज की प्राप्ति (Attainment or self Government)
(2) विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार (Boycott of British Goods)
(3) स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग (Use of Native Goods)
(4) राष्ट्रीय शिक्षा की मांग (Demand of National Education)

COURSE NAME – B.Ed. 1st YEAR SESSION – 2021-2023

SUBJECT - भारतीय शिक्षा का इतिहास

TOPIC NAME -

PAGE NO.

DATE :

राष्ट्रीय शिक्षा के विशेषताएँ या सिद्धांत :—

7 अगस्त 1905 ई० को हुए कोलकाता अधिवेशन में राष्ट्रीय नेताओं तथा शिक्षाशास्त्रियों के बीच विचार - विमर्श के बाद राष्ट्रीय शिक्षा के निम्नलिखित विशेषताएँ या आधारभूत सिद्धांत निर्धारित किये जाये।

1. शिक्षा भारतीयों के नियंत्रण में हो शिक्षा की संरचना, संगठन एवं संचालन का अधिकार भारतीयों को हो।

श्रीमती एनी बेसेंट ने कहा था-

"भारतीय शिक्षा भारतवासियों द्वारा नियंत्रित भारतवासियों द्वारा निर्मित और भारतवासियों द्वारा संचालित होनी चाहिए।"

2. अंग्रेजी को शिक्षण का माध्यम और अनिवार्य न बनाया जाये। इसके स्थान पर मातृ-भाषाओं को शिक्षण का माध्यम बनाया जाये।

3. शिक्षा का उद्देश्य एवं आदर्श संस्कृति पर आधारित हो।

4. पाठ्यक्रम में व्यावसायिक विषयों का समावेश हो।

5. यूरोपीय भाषाओं साहित्यों एवं विज्ञानों के अध्ययन को भी प्रोत्साहित किया जाये।

इस क्रम में लाला लाजपतराय ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किया —

"मेरे विचार से भारत में यूरोपीय भाषाओं, साहित्यों एवं विज्ञानों के अध्ययन को प्रोत्साहित न करने का प्रयास मूर्खता एवं पागलपन होगा।"

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थाओं की स्थापना :-

इस दिशा में प्रथम प्रयास बंगाल में हुआ श्री गुरुदास बनर्जी की अध्यक्षता में 15 अगस्त 1906 ई० को राष्ट्रीय शिक्षा परिषद का गठन किया गया। रास बिहारी बोस और रविन्द्र नाथ टैगोर आदि राष्ट्रीय नेता इससे सम्बद्ध हो गए। कुछ समय में ही इस समिति के पास लाखों रुपये जमा हो गए, जिससे उसने निम्न कार्य किए :

1. राष्ट्रीय शिक्षा के लिये प्राथमिक शिक्षा से लेकर बी० बी० तक की शिक्षा के विकास की योजना तैयार की।
2. पश्चिम बंगाल में 11 और पूर्वी बंगाल में 40 माध्यमिक विद्यालय खोले गए।
3. समिति ने कलकत्ता में नेशनल कॉलेज स्थापित किया। श्री अरविन्द घोष को इसका प्रिंसिपल बनाया।
4. कलकत्ता में ही एक टेक्नीकल इंजीनियर खोला जो बाद में जादवपुर को [illegible]

SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. 1st YEAR SESSION – 2021-2023

SUBJECT – ....

PAGE NO.
DATE :

ऑफ इन्जीनियरिंग एण्ड टेक्नोलॉजी के रूप में विकसित हुआ। (Technical Institute Jadavpur college of engineering and Technology)

इस प्रकार से थोड़े ही समय में सम्पूर्ण बंगाल में राष्ट्रीय विद्यालयों का जाल बिछ गया, आर्य प्रतिनिधि सभा ने वृन्दावन और हरिद्वार में गुरुकुल स्थापित किये और अन्य स्थानों पर दयानन्द, एंग्लो वैदिक कॉलेज स्थापित किये गये।

"राष्ट्रीय शिक्षा आंदोलन का प्रभाव:—

सन 1906 ई० में मुस्लिम लीग की स्थापना के बाद 1920 ई० में अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी जामिया मिलिया इस्लामिया एवं अलीगढ़ की स्थापना की गई। इसके अलावा देश के अन्य भागों में मुस्लिम शिक्षा संस्थाएँ खोली गई।

पूना में नारी वि० वि० की स्थापना, महात्मा गाँधी की वर्धा योजना, रवीन्द्रनाथ टैगोर की शान्ति निकेतन, हीरालाल शास्त्री की वन स्थली, विद्यापीठ, अरविन्द घोष का अरविन्द आश्रम आदि शिक्षा संस्थाएँ खोली गई।

युवा (यंग) बंगाल आंदोलन

PAGE NO.
DATE :

युवा बंगाल आंदोलन कट्टरपंथी बंगाली, बंगाली स्वतंत्र विचारकों का एक समूह था। हिन्दू कॉलेज के तेजतर्रार अध्यापक हेनरी लुइस डेरोजियो के नाम पर वे डेरोजियन के नाम से जाने जाते थे। युवा बंगाली हिन्दू समाज के स्वतंत्र विचारों की भावना व मौजूदा सामाजिक और धार्मिक संरचना के खिलाफ विद्रोह से प्रभावित व उत्साहित थे।
19वीं सदी के प्रारंभ में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति पश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति से ग्रस्त (आक्रांत) थी। उस समय शिक्षित भारतीय अंग्रेजी भाषा, पोशाक, साहित्य व पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान को श्रेष्ठ मानते थे। जिसके परिणामस्वरूप भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति पर प्रश्नचिन्ह लग गया था। 1813 ई० के पश्चात ईसाई पादरियों का भारत में बड़े पैमाने पर आगमन हुआ। इन ईसाई धर्म प्रचारकों ने सामाजिक कुरीतियों को अपनाकर हिन्दू एवं मुस्लिम दोनों ही धर्मों पर प्रहार करना प्रारंभ किया जिसके परिणामस्वरूप असंख्य हिन्दुओं ने ईसाई धर्म स्वीकार किया। धर्मांतरण के इस प्रवृति पर अंकुश (रोक) लगाने के लिए अनेक हिन्दू व मुसलमान अग्रसर हुए। इनके प्रयासों से अनेक धार्मिक एवं सामाजिक आंदोलन हुए। बंगाल के युवा वर्ग में 19वीं शताब्दी में नवीन वर्ग का अभ्युदय हुआ।

SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. 1st YEAR SESSION – 2021-2023

SUBJECT -

PAGE NO.

DATE :

इसी उग्रवादी प्रवृति ने यंग बंगाल आंदोलन
का मार्ग प्रशस्त किया। इसका नेतृत्व एक
एंग्लो इंडियन हेनरी विवियन डेरोजियो ने
किया। ये पेशे से अध्यापक थे। उस समय
डेरोजियन ब्रह्म समाज आंदोलन से आकर्षित
थे। यंग बंगाल आंदोलन मूलतः देशी
एक बौद्धिक आंदोलन था। इसका प्रमुख
केन्द्र हिन्दू कॉलेज था। यंग बंगाल आंदो-
लन में ईसाई शामिल थे। जैसे एलेक्जेंडर
डफ जिन्होंने जनरल एसेंबली इंस्टीट्यूशन
का निर्माण किया। उनके विद्यार्थी
लाल बिहारी डे ब्रजेन्द्रनाथ सील शामिल
हुए, जो बाद में प्रमुख धर्मशास्त्री व
ब्रह्म समाज का विचारक बनने चले गये।

देवबन्दी आन्दोलन

देवबन्दी आन्दोलन

PAGE NO.
DATE :

देवबन्दी आन्दोलन का नाम उत्तरप्रदेश के शहर देवबन्द के नाम पर पड़ा है 1866 में दिल्ली के उत्तरप्रदेश के सहारनपुर शहर मे प्रमुख विद्वान द्वारा एक इस्लामी सेमिनार देवबन्द स्थापित किया गया। इस संस्था के संस्थापक मुहम्मद कासिम थे।

एक मुसलमान उल्मा (धर्मगुरु) ओ प्राचीन विद्या के अग्रणी थे देवबन्द आन्दोलन चलाया इसके दो प्रमुख उद्देश्य थे

(i) मुसलमानों में कुरान तथा हदीस की शुद्ध शिक्षा का प्रसार करना

(ii) विदेशी शासकों के विरुद्ध जिहाद की भावना को बनाए रखना।

देवबन्द आन्दोलन मे सन् 1885 में स्थापित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का स्वागत किया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के विद्रोह और उपनिवेशवाद के प्रतिरोध के लिए एवं अंग्रेजों द्वारा कब्जे का विरोध एवं इस्लाम के संरक्षण हेतु उलेमा देवबन्द पर एकत्र हुए और एक सुरक्षित ठिकाना बनाया।

इस्ल... धा... स्थल

आर्य समाज

PAGE NO.
DATE :

आर्य समाज की स्थापना गुजरात के काठियावाड के निवासी श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती ने की थी वे एक अत्यन्त शक्तिशाली तथा प्रभावशाली वक्ता थे। उनके भाषणों के ही कारण आर्यसमाज का प्रभाव सर्वसाधारण पर हुआ सन् 1877 ई० में इन्होंने आर्यसमाज की स्थापना बम्बई में की इन्होंने हिन्दू धर्म को सब धर्मों से श्रेष्ठ कहा इसके साथ उन्होंने यह भी कहा कि मूर्ति पूजा जन्म पर आधारित जाति पाँति छूआ छूत सतीप्रथा इत्यादि का वेदों में कोई भी वर्णन नहीं है। इन्हें खत्म करने और विधवाओं को फिर से विवाह करने पर जोर दिया। इससे भी महत्वपूर्ण कार्य उन्होंने यह किया कि वे भारत के निवासियों में आत्म सम्मान देश के प्रति प्रेम स्वतंत्रता और अपने पूर्वजों पर गौरव करने का भाव सभी में ला दिया यही भाव स्वतंत्रता आंदोलन के कारण हो गए।

इसके बाद 'सत्यार्थ प्रकाश' जैसी पुस्तक लिखकर उन्होंने अपने मूल विचारों को अभिव्यक्त किया समानता एवं धार्मिक कट्टरता की भावना को लेकर आर्य समाज ने भारत में धार्मिक सामाजिक शैक्षिक और

राजनीतिक क्षेत्र में व्यापक कार्य किया इन्होंने वेदों की श्रेष्ठता को स्वीकारा और मन्त्र, पाठ, हवन, यज्ञ कर्म आदि को बल दिया सामाजिक क्षेत्र में आर्य समाज ने बाल विवाह, बहुविवाह, पर्दा प्रथा, जाति प्रथा, सती प्रथा इत्यादि कुरीतियों का विरोध किया शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज ने विभिन्न स्थानों पर गुरुकुल स्थापित किये।

आर्य समाज के प्रणेता स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ही सर्वप्रथम स्वराज शब्द का प्रयोग किया तथा विदेशी वस्तुओं के प्रयोग का बहिष्कार एवं स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करना सिखाया। सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने लिखा कि "कोई कितना ही कहे परन्तु स्वदेशी राज्य सर्वोपरि होता है।"

SESSION - 2021-2023

PAGE NO.
DATE :

अलीगढ़ आंदोलन

19वीं शताब्दी के मुस्लिम धार्मिक एवं सामाजिक आन्दोलनों की कड़ी में अलीगढ़ आन्दोलन की एक अलग भूमिका है। सर सैयद अहमद खान ने अलीगढ़ आन्दोलन की शुरूआत की अलीगढ़ आन्दोलन का भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा विशेष तौर पर मुस्लिम समाज पर जिस प्रकार से हिन्दुओं के लिए राजा राममोहन राय ने जो कार्य किया वही कार्य सर सैयद अहमद खान ने भारतीय मुसलमानों के लिए किया था।

अलीगढ़ आन्दोलन ने मुस्लिम संप्रदाय की शिक्षा सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति तथा उनके आधुनिकीकरण के लिए विविध कार्य किया। आन्दोलन का अर्थ आरम्भ में राजनीतिक थी। 1886 में सर सैयद अहमद खाँ ने ऑल इण्डिया मोहम्मडन) एजूकेशनल कॉन्फ्रेंस की स्थापना अलीगढ़ आन्दोलन के शैक्षिक उद्देश्यों को बढ़ावा देने के लिए की यह आन्दोलन उर्दू साहित्य की नवीन प्रवृति का परिचय देता है इस आंदोलन के मुख्य दो लक्ष्य थे।

(1) अंग्रेज एवं मुसलमानों के बीच सम्बन्धों को ठीक करना।

(2) मुसलमानों में आधुनिक शिक्षा का प्रसार करना।

PAGE NO.
DATE :

सर सैयद अहमद खान,

और उनके संगठन ने उर्दू साहित्य के पुरानी लेखन पद्धति को त्याग किया और उन्होंने सरल पद्धति को अपनाया जिसे मुसलमानों को आन्दोलन के उद्देश्य को समझने में मदद मिली।

PAGE NO.
DATE:

जमिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय

इस संस्था की स्थापना मौलाना मोहम्मद अली ने 1920 ई० में अलीगढ़ में की थी परन्तु प्रशासनिक दृष्टिकोण से सन् 1925 ई० में यह संस्था दिल्ली में स्थानान्तरित कर दी गई यह एक पूर्णतया आत्मनिर्भर संस्था है जो सभी धर्म भाषा एवं संप्रदाय से संबंधित छात्रों के लिए है।

स्थापना के उद्देश्य

1. अपनी सांस्कृतिक परम्परा के अनुसार आधार पर नवयुवकों की शिक्षा व्यवस्था करना किन्तु दूसरी संस्कृतियों में भी जो सत्य और लाभदायक है उसे स्वीकार करना।

2. छात्रों के हृदय में सेवा सहनशीलता आत्म संयम और आत्मसम्मान के भाव समाहित करना।

3. छात्रों के विकासशील मन की बौद्धिक और भावात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति करना।

4. यह संस्था छात्रों में राष्ट्रीयता व आदर्श नागरिक बनने हेतु उच्च मूल्यों की शिक्षा प्रदान करती है।

PAGE NO.
DATE :

जामिया मिलिया इस्लामिया के विभाग

शिशु बालोद्यान व प्राथमिक शिक्षा विभाग

- कार्यकाल – 6 वर्ष
  बेसिक शिक्षा – भारतीय कला / शिल्प
- बाल प्रधान व क्रिया प्रधान शिक्षा व्यवस्था

माध्यम – मातृभाषा

माध्यमिक शिक्षा विभाग

- कार्यकाल 6 वर्ष
- बेसिक शिक्षा शिल्प प्रधान
- व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास
- डाल्टन योजना पद्धति द्वारा शिक्षा
- विषय – मातृभाषा अंग्रेजी, भारतीय भाषा गणित, समाज कला जीवविज्ञान अर्थशास्त्र नागरिक शास्त्र

वि० वि० स्तर पर शिक्षा विभाग

- अवधि - 2 वर्ष
- विषय – इस्लामिक विज्ञान सामाजिक विज्ञान व अंग्रेजी की शिक्षा

इसके अतिरिक्त आवासीय विभाग भी है

(1) आवासीय विश्वविद्यालय — इसमें कला वर्ग और सामाजिक विज्ञानों की शिक्षा का उच्चस्तरीय प्रबन्ध अरबी मदरसा के आलिम फाजिलों को देश भाषा और सामाजिक विज्ञानों के लिए विशेष प्रबन्ध इसमें एक विशाल पुस्तकालय भी है जिसमें लगभग 25000 बहुमूल्य पुस्तकें हैं।

2 आवासीय प्रोद्योगिक — आधुनिक तकनीक से शिक्षा देने की व्यवस्था करना एवं उद्योग धंधों की शिक्षा पर अधिक बल दिया जाता है।

3 आवासीय प्राथमिक विद्यालय — इसमें प्रोजेक्ट विधि से शिक्षा दी जाती है। इस स्कूल में एक बाग, एक बैंक तथा एक सरकारी दुकान है जिसका प्रबंध बच्चे स्वयं करते हैं।

छात्र संख्या — 1937 में यहाँ भारत एवं एशिया के विभिन्न देशों के लगभग 400 छात्र इसमें अध्ययनरत थे।

आय के स्रोत — इसके पास अपना कोई स्थायी कोष नहीं है। भोपाल सरकार एवं दिल्ली म्युनिसिपलिटी भी इसका आर्थिक सहायता करती है। इस संस्था के संस्थापक मौलाना मोहम्मद अली ने कहा था कि

"इस संस्था का सबसे बड़ा धन इसका उत्साह और बलिदान होगा और जनता की इसके प्रति सहानुभूति और श्रद्धा।"

तब से यह संस्था सतत् प्रगति की ओर अग्रसर है। इस प्रकार मुस्लिम सम्प्रदाय द्वारा संचालित राष्ट्रवादी संस्थाओं में जामिया मिलिया इस्लामिया एक राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्था है।

PANDEY BADDI

PAGE NO.
DATE :

सत्यशोधक समाज

प्राचीन काल से ही निम्न जातियों का शोषण होता रहा है और उनकी सामाजिक स्थिति दिन पर दिन दयनीय होती चली गई। जाति एवं धर्म के नाम पर उनका शोषण होता रहा उन्नीसवीं शताब्दी में जब भारत में 'पुनर्जागरण आन्दोलन' हुआ उस समय समाज सुधार की प्रक्रिया प्रारंभ हुई ये समाज सुधार आंदोलन धर्म एवं समाज सुधार से सम्बन्धित रहे। इन्होंने निम्न जातियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए कोई विशेष कार्य नहीं किया तब निम्न जातियों के कुछ जागरूक लोगों को ऐसा महसूस हुआ कि बिना स्वयं प्रयत्न किए जातियों का उद्धार संभव नहीं है। अतः निम्न जातियों के भारत के विभिन्न भागों में अनेक आन्दोलन हुए। ये लोग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने लगे। निम्न जातियाँ इतनी उग्र हो गई कि वे अपने अधिकारों के लिए आवाज बुलन्द कर दी। राजनीतिक अधिकारों की मांग करने लगी महाराष्ट्र में दलित आन्दोलन में प्रमुख है - सत्यशोधक समाज और महार आन्दोलन।

यह आंदोलन ज्योतिबा फुले द्वारा 1870 ई० के दशक में अपनी पुस्तक गुलामगिरी

और सार्वजनिक सत्यधर्म पुस्तक एवं सत्यशोधक समाज द्वारा प्रारम्भ किया गया था। इस आन्दोलन का उद्देश्य ब्राह्मणों के अत्याचारों से दलितों की रक्षा करना और दलितों को उनके अधिकारों को दिलाना था।

कार्य

(i) जनता (मुख्यतः निम्न जातियां) में पुजारी वर्ग की स्वेच्छाचारिता के खिलाफ जागरूकता पैदा करना

(ii) दलितों के अधिकारों का दूसरा कार्य था आंदोलन का नेतृत्व करना।

इस आन्दोलन में शहरों के शिक्षित निम्न जातियों के लोग और गाँव की अछूत जनता दोनों ही सम्मिलित थी।

ज्योतिबा फूले ने 24 सितम्बर 1873 ई० को सत्यशोधक समाज की स्थापना की और निम्न जातियां अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने लगी।

वर्धा शिक्षा / बेसिक / बुनियादी तालीम
बुनियादी शिक्षा

PAGE NO.
DATE :

गाँधीजी ने भारतवासियों की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा की नवीन योजना प्रस्तुत की थी और तत्कालीन शिक्षा प्रणाली की कटु आलोचना करते हुए कहा था " यह विदेशी संस्कृति पर आधारित है और भारतीय संस्कृति को इसने पूर्णतया बहिष्कृत कर दिया है इसका एक मात्र उद्देश्य मानसिक विकास करना है। इसका हृदय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है और इसमें हाथों के कार्य का कोई स्थान नहीं है। इसमें शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है और वास्तविक शिक्षा विदेशी माध्यम द्वारा असम्भव है। "

22-23 अक्टूबर 1937 को वर्धा में आयोजित अखिल भारतीय शिक्षा सम्मेलन में देश की तत्कालीन परिस्थितियों एवं नागरिकों की आवश्यकता के अनुरूप गाँधी जी ने अपने शिक्षा सम्बन्धी निम्नलिखित विचार प्रस्तुत किये तथा इनके विचारों पर शिक्षाविदों एवं विद्वानों ने विचार विमर्श किया उसके उपरान्त निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किये थे।

PAGE NO.
DATE :

1. सात वर्ष के सभी बच्चों के निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा दी जानी चाहिए।
2. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए।
3. हस्तशिल्प पर आधारित शिक्षा दी जानी चाहिए
4. इस पद्धति से धीरे-धीरे शिक्षक का वेतन व्यय निकल जाने की आशा की जानी चाहिए।
5. शिल्प का चयन बच्चों की क्षमता एवं स्थानीय आवश्यकताओं के आधार पर हो।

1. बालकों द्वारा निर्मित वस्तुओं से विद्यालय के व्यय की आंशिक पूर्ति करना।
2. बेसिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद बालक एवं बालिका को व्यवसाय में स्वावलम्बी बनाना।
3. बालक का नैतिक विकास करना।
4. बालक को भारतीय संस्कृति के अनुरूप ढालना।
5. बालकों में प्रजातांत्रिक नागरिकता के गुणों का विकास करना।

बेसिक शिक्षा के सिद्धान्त

गाँधीजी ने बेसिक शिक्षा के मूल सिद्धान्तों पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा था।

"हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि बुनियादी तालीम देश के वातावरण में से पैदा हुई है और देश की आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है। यह वातावरण को पूरा कर सकती है। यह वातावरण भारत के सात लाख गाँवों में और उनमें रहने वाले करोड़ों लोगों में छाया हुआ है, उनको भूलाकर आप भारत को भी भूल जायेंगे। सच्चा भारत नगरों में नहीं बल्कि इन सात लाख गाँवों में बसा हुआ है।"

बेसिक शिक्षा के आधारभूत सिद्धान्त निम्न हैं

1. शारीरिक श्रम का सिद्धान्त (Physical labour)
2. शिक्षा को आत्मनिर्भर बनाने का सिद्धान्त
3. मातृभाषा द्वारा शिक्षण का सिद्धान्त
4. बाल केन्द्रित शिक्षण का सिद्धान्त
5. सर्वांगीण विकास का सिद्धान्त
6. निःशुल्क शिक्षा का सिद्धान्त
7. हस्तशिल्प का प्रशिक्षण का सिद्धान्त
8. परस्पर सहयोग से रहने का प्रशिक्षण का सिद्धान्त (बालक का समाजीकरण होता है)

PAGE NO.
DATE :

पाठ्यक्रम — Curriculum

बुनियादी शिल्पकार्य — Basic crafts

कृषि
1 कताई बुनाई
2 बागवानी
3 काष्ठ कला
4 चर्म कार्य
5 पुस्तक कला
6 मिट्टी का कार्य
7 मछली पालन
8 फल संरक्षण
9 अन्य स्थानीय हस्तकला
10

शिक्षण विषय — Educational Subject

1. मातृभाषा
2. गणित (नाप तौल)
   अंकगणित, बीजगणित
   रेखागणित
3. सामाजिक विषय
   (इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र
4. सामान्य विज्ञान
   (प्रकृति निरीक्षण
   बागवानी वनस्पति विज्ञान
   प्राणी विज्ञान, रसायन वि॰
   गृह विज्ञान, भौतिक विज्ञान
5. स्वास्थ्य विज्ञान
   (सफाई, व्यायाम
   खेलकूद
6. आचरण शिक्षा
   (नैतिक राष्ट्रीय पर्व
   समाज सेवा)
7. संगीत (8) चित्रकला

अवधि — 7 वर्षीय (प्राथमिक शिक्षा)

आयुवर्ग — 7-14 वर्ष

Abhi PANDEY

बेसिक शिक्षा में कक्षा 5 तक बालक एवं बालिकाओं के लिए समान पाठ्यक्रम एवं सतत् शिक्षा की व्यवस्था थी।

शिक्षण विधियाँ

वर्धा शिक्षा योजना में पाठ्य पुस्तक विधि के स्थान पर परियोजना विधि या प्रोजेक्ट मेथड को अपनाया गया था।

क्रिया द्वारा सीखना (Learning by doing)

1 मिट्टी के खिलौने लकड़ी की वस्तुओं का निर्माण कृषि कार्य इत्यादि क्रियाओं द्वारा छात्रों के शारीरिक एवं मानसिक विकास किया जाता है।

2 अनुभव द्वारा सीखना → Learning by experience

इस विधि में बालक अन्य छात्रों के साथ मिलजुलकर क्रिया करके अनुभव द्वारा सीखता है।

3 आत्माभिव्यक्ति द्वारा सीखना – इसमें छात्रों को स्वतंत्र रूप से आत्माभिव्यक्ति के अवसर प्राप्त होते हैं जिससे छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ता है।

जैसे – नाटक में भाग लेना।

खेलों में भाग लेना।

विशेषताएं (गुण)

निम्नलिखित विशेषताएं हैं।

- यह बालकेन्द्रित शिक्षा है।
- 7-14 वर्ष के बच्चों के लिए निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा
- [illegible] को समर्पित
- क्रियाप्रधान शिक्षण विधि
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा
- छात्रों में आत्मनिर्भरता की उत्पत्ति में सहायक
- आर्थिक सम्पन्नता प्रदान करने में सहायक
- छात्रों के नैतिक व चारित्रिक विकास में सहायक
- व्यावसायिक शिक्षा के साथ साथ सैद्धान्तिक विषयों व विज्ञान की शिक्षा प्रदान करने में सहायक।

दोष —

(1) यह योजना विशेष रूप से ग्रामों के लिए है न कि नगरों के लिए।

(2) इस योजना में उत्पादकता सिद्धान्त को ज्यादा महत्व है अतः इसका अनुकरण करने से बेसिक विद्यालय कुटीर उद्योग में परिणत हो जायें।

3 आधारभूत शिल्प के माध्यम से समस्त विषयों की शिक्षा दिया जाना संभव नहीं है।

PAGE NO.
DATE :

4 केवल प्राथमिक शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित किया गया। माध्यमिक और उच्च शिक्षा के सम्बन्ध पर कोई सुझाव नहीं दिया गया

5 परम्परागत (धार्मिक) विषयों की उपेक्षा की गई।

(6) इस योजना में आधुनिक विज्ञान तकनीकी व उद्योगों की शिक्षा व्यवस्था पर कोई ध्यान नहीं दिया गया।

7 इस योजना में छात्र छात्राओं को स्वअध्याय का बहुत कम अवसर प्राप्त होता है।